प्रो.डॉ.पद्मा पाटील,
अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर |

संस्तुति

मैं संस्तुति करती हूँ कि ' ***कु.पाटील अक्काताई पांडुरंग*** ' द्वारा लिखित " **वर्ष् 2005 की ' हंस ' पत्रिका में प्रकाशित कहानियों का अनुशीलन** " लघु शोध - प्रबंध परीक्षणार्थ अग्रेषित किया जाए |

7/03/2009

(प्रो.डॉ.पद्मा पाटील)

अध्यक्ष,
हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर-४१६००४.

स्थान : कोल्हापुर |

तिथि 07/ 03 / 2009

डॉ.साताप्पा शामराव सावंत,
एम्.ए., एम्.फिल्., पी.एच्.डी.,
अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
विलिंग्डन महाविद्यालय, सांगली |

प्रमाणपत्र

मैं यह प्रमाणित करता हूँ कि ' **सु.श्री.पाटील अक्काताई पांडुरंग** ' ने मेरे निर्देशन में **" वर्ष 2005 की ' हंस ' पत्रिका में प्रकाशित कहानियों का अनुशीलन "** यह लघु शोध - प्रबंध शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्.फिल्. (हिंदी) उपाधि के लिए लिखा है | पूर्व योजनानुसार संपन्न इस कार्य में शोध - छात्रा ने मेरे सुझावों का पूर्णतः पालन किया है, जो तथ्य इस लघु शोध - प्रबंध में प्रस्तुत किए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं | शोध - छात्रा के कार्य से मैं पूरी तरह से संतुष्ट हूँ | इस लघु शोध- प्रबंध को आद्योपांत पढ़कर ही मैं इसे परीक्षणार्थ अग्रेषित करने हेतु अनुमति प्रदान करता हूँ |

शोध-निर्देशक

(डॉ.साताप्पा शामराव सावंत)
अनुक्रमांक
हिंदी विभाग,
विलिंग्डन महाविद्यालय, सांगली.

स्थान : कोल्हापुर |

तिथि 07/ 03 / 2009

प्रख्यापन

" वर्ष 2005 की ' हंस ' पत्रिका में प्रकाशित कहानियों का अनुशीलन " यह लघु शोध - प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्.फिल.(हिंदी) उपाधि के लिए प्रस्तुत की जा रही है | प्रस्तुत रचना इससे पहले इस विश्वविद्यालय या अन्य किसी भी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है |

शोध छात्रा

(सु.श्री.पाटील अक्काताई पांडुरंग)

स्थान : कोल्हापुर

तिथि :07/ 03 / 2009

प्राक्कथन

प्राक्कथन :

प्रेरणा एवं विषय चयन :

कहानी के प्रति मेरी हमेशा से विशेष अभिरूचि रही हैं | कम समय में बोध देने के साथ बच्चों से बूढ़ों का मनोरंजन करनेवाली इस विधा ने मुझे बी.ए. के अध्ययन के समय अधिक आकृष्ट किया | अतः मैं प्रेमचंद, हरिशंकर परसाई, महीप सिंह, यशपाल, कमलेश्वर, राजेन्द्र यादव, मन्नू भंड़ारी आदि अनेक कहानीकारों की कहानियाँ पढ़ती रही | तब मुझे कहानी की कथावस्तु, चरित्र - चित्रण, कथोपकथन, भाषा - शैली, शीर्षक की सार्थकता आदि का परिचय हुआ | नये कहानीकार अपनी कहानियों को पत्रिकाओं में प्रकाशित करते हैं | तब मेरा ध्यान पत्रिकाओं में छपी कहानियाँ पढ़ने की ओर भी रहा हैं | ' हंस ' पत्रिका की कहानियों में विषय वैविध्य दिखाई देता है | अतः आदरणीय गुरुवर्य ' डॉ.साताप्पा सावंत ' जी से एम्.फिल. के लघु - शोध प्रबंध के विषय के बारे में चर्चा करने पर " वर्ष 2005 की ' हंस ' पत्रिका में प्रकाशित कहानियों का अनुशीलन " यह विषय चुना गया | तब उन्होंने इस विषय पर मुझे मार्गदर्शन करने की स्वीकृति दी | अतः एम्.फिल. लघु शोध-प्रबंध के अध्ययन हेतु ' वर्ष 2005 ' की ' हंस ' पत्रिका में प्रकाशित कहानियों को लिया है | इसपर विवेचित काल में प्रकाशित कहानियों को एम्.फिल. लघु शोध - प्रबंध के अध्ययन का विषय बनाया है |

' हंस ' प्रगतिशील विचारधारा का वहन करनेवाली सुप्रसिद्ध पत्रिका है | इसमें प्रकाशित साहित्य में समाज के प्रत्येक स्तर का वर्णन दिखाई देता है | कहानीकारों ने अपनी कहानियों को लिखते समय समाज मन को समझ कर ही अपने विषयों को अपनी कलम द्वारा लिखा है | विवेच्य कहानी - साहित्य में राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, मनोवैज्ञानिक आदि विविध विषयों से संबंधित कहानियाँ लिखी हैं |

अनुसंधान के प्रारंभ में मेरे सामने निम्नांकित प्रश्न उजागर हुए थे -

1. युगीन परिस्थितियाँ कितने प्रकार की होती है ?
2. विवेच्य कहानियों के कथानक क्या है ? उनकी विशेषताएँ क्या हैं ?

3. विवेच्य कहानियों के वर्गीकरण के आधार क्या है ? उनका वर्गीकरण किस प्रकार से किया जा सकता है ?

4. विवेच्य कहानियाँ तात्त्विक विवेचन के आधारपर खरी उतरती हैं या नही ?

5. विवेच्य कहानियों में कौन - कौनसी समस्याएँ नज़र आती है ?

विवेच्य कहानियों के अध्ययन के उपरान्त उपर्युक्त प्रश्नों के जो उत्तर मुझे प्राप्त हुए उन्हें आधार मानकर निकाले गए निष्कर्ष निचोड़ रूप में उपसंहार में दिए हैं|

सीमा और व्याप्ति :-

अनुसंधान के हर विषय की सीमा और व्याप्ति होती हैं | प्रस्तुत लघु शोध - प्रबंध की सीमा और व्याप्ति को ध्यान में रखकर सघनता के साथ अध्ययन करने के पश्चात् अध्ययन की सुविधा के लिए मैंने अपने लघु शोध - प्रबंध को निम्नांकित पाँच अध्यायों में विभाजित करके शोध का विवेचन - विश्लेषण किया है |

प्रथम अध्याय का शीर्षक है - " वर्ष 2005 की विभिन्न परिस्थितियाँ | " इस अध्याय के अंतर्गत ' वर्ष 2005 ' की विभिन्न परिस्थितियों पर प्रकाश ड़ालने का प्रयास किया है | ' वर्ष 2005 ' की राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक एवं साहित्यिक परिस्थितियों का विवेचन किया है | अध्याय के अंत में निष्कर्ष दिए हैं |

द्वितीय अध्याय का शीर्षक है - " विवेच्य कहानियों का सामान्य परिचय | " प्रस्तुत अध्याय में ' वर्ष 2005 ' की ' हंस ' पत्रिका में प्रकाशित कहानियों का सामान्य परिचय दिया हैं | अध्याय के अंत में निष्कर्ष दर्ज किए हैं |

तृतीय अध्याय का शीर्षक हे - " विवेच्य कहानियों का वर्गीकरण | " प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत विवेच्य कहानियों का वर्गीकरण विषय की दृष्टि से प्रतिपादित किया हैं | इनमें राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, मनोवैज्ञानिक, ऐतिहासिक, आर्थिक जीवन से संबंधित कहानियों के रूपों में विवेचन प्रस्तुत किया हैं | अध्याय के अंत में निष्कर्ष दर्ज किए हैं |

चतुर्थ अध्याय का शीर्षक है - " विवेच्य कहानियों का तात्त्विक विवेचन | " प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत विद्वानों द्वारा स्वीकृत कहानी संबंधी छः तत्त्वों के आधारपर विवेचन प्रस्तुत किया हैं | कथावस्तु, पात्र चरित्र - चित्रण, कथोपकथन, देश - काल - वातावरण, भाषा - शैली, उद्देश्य आदि के आधारपर विवेच्य कहानियों का तात्त्विक विवेचन प्रस्तुत किया है | अध्याय के अंत में निष्कर्ष दिए गए हैं |

पंचम् अध्याय का शीर्षक है - " विवेच्य कहानियों में चित्रित समस्याएँ | " प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, मनोवैज्ञानिक, प्रशासनिक समस्याओं का विवेचन किया हैं | अध्याय के अंत में निष्कर्ष दर्ज किए हैं |

अंत में ' उपसंहार ' के रूप में इस लघु शोध - प्रबंध का सार रूप दिया है | तदुपरान्त संदर्भ ग्रंथ - सूची दी है |

<u>प्रस्तुत शोध - कार्य की मौलिकता</u> :-

1. प्रस्तुत लघु शोध - प्रबंध में ' वर्ष 2005 ' की विभिन्न परिस्थितियों का लेखा - जोखा वस्तुनिष्ठ रूप में प्रस्तुत किया हैं |
2. ' वर्ष 2005 ' की ' हंस ' पत्रिका में प्रकाशित कहानियों का तात्त्विक विवेचन विद्वानों द्वारा स्वीकृत कहानी संबंधी छः तत्त्वों के आधारपर किया हैं |
3. ' हंस ', ' वर्ष 2005 ' में प्रकाशित कहानियों में चित्रित विविध समस्याओं का गहराई के साथ विवेचन - विश्लेषण किया है |
4. ' हंस ', ' वर्ष 2005 ' की प्रकाशित कहानियों का अनुशीलन को अध्ययन का केंद्र - बिंदू मानकर प्रस्तुत लघु शोध - प्रबंध में प्रथमतः ही अनुसंधान हुआ है |
5. ' वर्ष 2005 ' की ' हंस ' पत्रिका में प्रकाशित प्रत्येक कहानीकारों की कहानियों को अनुशीलन की दृष्टि से एक - सूत्र में बाँधना प्रस्तुत विषय की मौलिकता है |

* ऋणनिर्देश *

प्रस्तुत लघु शोध - प्रबंध को सफल बनाने में जिन विद्वानों का एवं स्नेहियों का प्रोत्साहन एवं सहयोग मिला, उन सभी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मैं केवल औपचारिकता न समझकर आद्य कर्तव्य समझती हूँ |

प्रस्तुत लघु शोध - प्रबंध की पूर्ति श्रद्धेय गुरूवर्य आदरणीय ' डॉ.साताप्पा शामराव सावंत ' अध्यक्ष, हिंदी विभाग, विलिंग्ड़न महाविद्यालय, सांगली के आत्मीय एवं कुशल निर्देशन का फल है | आपके द्वारा दिए गए अनमोल सहयोग के कारण ही मैं प्रस्तुत लघु शोध - प्रबंध को पूर्ण करने में सफल बनी; अतः मैं आपके प्रति सदैव ऋणी रहूँगी |

प्रस्तुत शोध - कार्य की सफलता के लिए मुझे गुरूजनों का बड़ा आत्मीय प्यार मिलता रहा है | इनमें प्रमुख रूप से ' शिवाजी विश्वविद्यालय ' हिंदी विभागाध्यक्ष ' प्रो.डॉ.पद्मा पाटील ' जी तथा ' डॉ.अर्जुन चव्हाण ' जी, ' प्रो.डॉ.पांडुरंग पाटील 'जी, ' डॉ.शोभा निंबाळकर ', ' डॉ.अंतरेड्डी मॅड़म ', ' डॉ.मणियार मॅड़म ' की प्रेरणा, मार्गदर्शन मेरे लिए सराहनीय रही हैं | ऐसे गुरूजनों के प्रति मैं सहृदय से कृतज्ञ हूँ |

प्रस्तुत लघु शोध - प्रबंध को पूर्ण करने के लिए मुझे विलंब हुआ अतः बार - बार मैं यह अनुसंधान कार्य बीच में ही छोड़ने का निर्णय लेती रहती | लेकिन हर बार मुझमें आत्मविश्वास जगाने, प्रेरणा देने और मुझे उत्साहित करने में मेरे हितैषी, आदरणीय पति ' श्री एकनाथ भगवान यादव ' जी ने कोई कसर नहीं छोड़ी | जिसके फलस्वरुप मैं यह अनुसंधान कार्य सफलता से पूर्ण कर पाई | अतः मैं दिल से उनके प्रति सहृदय से कृतज्ञ हूँ |

मेरे जीवन का कार्य माता - पिता के बिना संपन्न नहीं हो सकता | इन्हीं के आशीर्वाद का फल है कि मैं अपने कार्य की पूर्ति में सफल हुई हूँ | आज मैं जो कुछ भी हूँ, उन्हीं के संस्कार, स्नेह के बदौलत हूँ | अतः मैं आजन्म उनके ऋण से मुक्त होना नहीं चाहती | मेरी सास सौ. शांता जी, ससुर श्री. भगवान यादव जी, देवर श्री. लालासो जी, भाई सागर, पिता श्री. पांडुरंग यशवंत पाटील, माँ

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.

सौ. सुनिता, बहन रंजना, मनिषा इनकी प्रेरणा मैं भूल नहीं सकती | और मेरी प्यारी बेटी ' खुशी ' का दुलार भी मुझे पल - पल प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रुप से सहयोग प्राप्त कराता रहा हैं |

अब तक के शिक्षा जीवन में मुझे गुरुजनों का अमूल्य प्यार तथा प्रेरणा मिलती रही है | इनमें प्रमुख रुप से ' सौ. एस्. एस्.कुलकर्णी मॅड़म, ज्युबिली (इंग्रजी) कन्या शाला, मिरज, सौ.शिंदे मॅड़म', श्री.पी.के.पाटील सर, सेकंड़री स्कूल ॲण्ड़ ज्युनियर कॉलेज, भिलवड़ी, श्री.मगदूम सर, सौ.पाटील मॅड़म, नांद्रे विद्यालय, नांद्रे, सौ.विजया जाधव मॅड़म, एम.व्ही.पी.सी.महाविद्यालय, मिरज आदि गुरूजनों ने मुझे प्रस्तुत अध्ययन में यथायोग्य मार्गदर्शन किया | ऐसे गुरूजनों के प्रति मैं सहृदय से कृतज्ञ हूँ |

मुझे प्रेरणा तथा मानसिक आधार देनेवाली मेरी प्रिय सहेलियाँ सुवर्णा गावड़े, ज्योती सौंदड़े, वैशाली जाधव, रूपाली जंगम आदि के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मैं अपना कर्तव्य समझती हूँ |

प्रस्तुत लघु शोध - प्रबंध के लिए आवश्यक संदर्भ ग्रंथों की प्राप्ति ' बॅरिस्टर बाळासाहेब खर्डेकर ग्रंथालय, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर, विलिंग्डन महाविद्यालय, सांगली, सेकंड़री स्कूल ॲन्ड ज्युनिअर कॉलेज, भिलवडी ' से हुई | अतः इन ग्रंथालयों के अध्यक्ष तथा अन्य सभी कर्मचारियों की मैं ऋणी हूँ |

इस लघु शोध - प्रबंध को आकर्षक एवं यथोचित रूप में टंकन करनेवाली ' श्रीमती माधुरी बाचल ' की भी मैं आभारी हूँ | जिन्होंने शीघ्रतिशीघ्र टंकन का कार्य पूर्ण करके दिया | जिन ज्ञात - अज्ञातों की शुभकामनाएँ मुझे प्राप्त हुई उन सबके प्रति आभार प्रकट कर मैं प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध को अत्यंत विनम्रता से विद्वानों के सामने परीक्षणार्थ प्रस्तुत करती हूँ |

शोध छात्रा,

(कु.अक्काताई पांडुरंग पाटील)

स्थान : कोल्हापुर

तिथि :07/ 03 / 2009